RNI No.RAJHIN/2012/44901

Postal Reg. No. जयपुर सिटी/403-2024-26

निवेश पत्रिका

निवेश करें लगातार, सपने करें साकार

वर्ष : 13 अंक 9 www.mftoday.com हिन्दी मासिक जयपुर, 1 अप्रैल 2025 कुल पृष्ठ : 8 मूल्य : 10 रुपए email : Services@mftoday.com

नए वित्तीय वर्ष में फाइनेंशियल प्लानिंग करते समय इन 5 बातों का रखे ध्यान

अप्रैल के साथ ही नए फाइनेंशियल ईयर की शुरुआत हो चुकी है। नया साल सिर्फ नई Tax प्लानिंग या Investment रणनीति बनाने का सबसे बेहतरीन समय होता है। साथ ही यही मौका है जब हम पुरानी गलतियों से सबक लेते हुए नए सिरे से नई शुरुआत करें। अक्सर हम जाने अनजाने फाइनेंशियल प्लानिंग और मनी मैनेजमेंट में बड़ी चूक कर जाते हैं, जिसका खामियाजा हमें साल के अंत में आनन फानन में टैक्स सेविंग इंस्ट्रूमेंट में Investment कर चुकाना पड़ता है। यही ध्यान रखते हुए नए वित्तीय वर्ष की शुरुआत के साथ ऐसी पांच बातें बताने जा रहे है, जिन पर कायम रहकर आप इस साल की शुरुआत से ही सुरक्षित भविष्य की नींव रख सकते हैं।

अपने Investment के फैसले को अमल में लाएं

कुछ लोग निवेश को लेकर बहुत जल्दबाजी में होते हैं। वहीं कुछ मानते हैं कि निवेश के लिए सही समय का इंतजार करना चाहिए। इंतजार अपने प्रोमेशन का, अच्छी सैलरी या इंक्रीमेंट का कर सकते हैं। लेकिन जरूरी है कि निवेश के फैसले को टालना नहीं चाहिए। जैसे ही कमाना शुरु करते हैं उसी वक्त से निवेश शुरु कर देना चाहिए। सेविंग्स एकाउंट में आपके पैसों पर केवल 3 फीसद से लेकर 4 फीसदी तक का ब्याज मिलता है। इसलिए निवेश के लिए म्यूचुअल फंड, इक्विटी जैसे उपकरणों का इस्तेमाल करना चाहिए।

हर वक्त कुछ नया ढूंढ़ने का प्रयास

अगर आप लंबे समय से निवेश करते आ रहे हैं तो आपने यह जरूर देखा होगा कि भारतीय शेयर बाजार ने 10 से 20 वर्षों में 14 फीसदी से लेकर 16 फीसदी तक की बढ़ोत्तरी की है। निवेशक अपने निवेश में नियमित रूप से कुछ न कुछ और निवेश कर सकता है ताकि अच्छा रिटर्न मिल सके। लोग कुछ नए की तलाश में ज्यादा रहते हैं बजाए इसके कि जिसमें निवेश किया हुआ है उसमें ही थोड़ थोड़ और निवेश करें।

डाइवर्सिफिकेशन जरूरी है

जैसा कि वारेन बफेट ने कहा है कि सभी अंडों को एक ही टोकरी में नहीं रखना चाहिए। इसलिए हमेशा अपना फाइनेंशियल पोर्टफोलियो को अलग अलग जगहों पर निवेश कर के मैनेज करना चाहिए। इसे डाइवर्सिफिकेशन कहते हैं। डाइवर्सिफिकेशन तब होता है जब अपने पैसों को एक से ज्यादा जगहों पर निवेश किया जाता है। जैसे कि अपने पोर्टफोलियो में इक्विटीज और डेट फंड का सही संतुलन होना चाहिए। कई भारतीयों के पास इक्विटीज को लेकर पर्याप्त जानकारी नहीं होती है। ध्यान रखें कि फिक्स्ड डिपॉजिट, रियल एस्टेट और गोल्ड प्रकृति में एक जैसे ही हैं और लंबे समय के निवेश के बाद ये तीनो मंहगाई को मात देने वाले रिटर्न्स देते हैं।

कुछ अंतराल के बाद रिव्यू करे

अपनी संपत्ति का विश्लेषण कर लेना चाहिए। कुछ लोग नहीं करते नतीजन पैसे गवा बैठते है। संपूर्ण रूप से देख लें कि कितने एसेट्स है और क्या कदम उठाने चाहिए अपने निवेश को और मजबूत बनाने के लिए। साल में एक बार विश्लेषण जरूर करें। ऐसा करने से आप पता लगा सकते हैं कि कौन से एसेट अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं और कौन नेगेटिव रिटर्न दे रहे हैं।

जल्दी अमीर बनने के लिए न करें गलत निवेश

जल्दी अमीर बनने के चक्कर में अक्सर लोग भ्रामक विज्ञापन से गलत जगह ट्रेडिंग से नुकसान के शिकार हो जाते हैं। लोग मंहगे स्टॉक्स खरीद लेते हैं और जब गिरावट आती है तो पैसे खोने के दर से बेच देते है। ऐसा करने से पैसा बनाने के बजाए पैसा खो देते हैं। इस मामले में जो पहली बार निवेश कर रहा है वो भी और अनुबवी भी दोनों प्रभावित होते हैं। इसलिए निवेश के समय धैर्य बनाए रखना चाहिए। तेजी और मंदी दोनों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। अच्छे रिटर्न के लिए गोल आधारित तथा विशेष समय तक के लिए निवेश करें। विश्वसनीय एवं प्रोफेशनल की मदद से आप निर्धारित गोल के साथ अच्छा रिटर्न भी ले सकते है।

इनसाईड स्टोरी

2

SIP investment: क्या है 8/4/3 का एसआईपी नियम?...

3

इक्विटी फंडों में निवेश के बाद धैर्य जरूरी...

4

कम कमाई में बचत करना बहुत जरूरी है...

5

शेयर बाजार में भारी उतार-चढ़ाव वाले दौर से न घबराएं...

6

होम लोन ट्रांसफर कराने से पहले इन बातों पर जरूर करें गौर...

7

म्यूचुअल फंड निवेश को भुनाने से पहले इन बातों पर गौर करना...

8

'म्यूचुअल फंड में निवेश करने का हर वक्त सही वक्त होता है'...

अपनी बचत को सही निवेश कर अपने गोल को पूरा करने हेतु सम्पर्क करेंः - 8287 099 099

निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

SIP investment: क्या है 8/4/3 का एसआईपी नियम? निवेश की इस स्ट्रैटेजी के हैं बहुत फायदे

म्यूचुअल फंड में निवेश के लिए व्यवस्थित निवेश योजनाएं यानी SIP सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाला साधन बन चुका है। एसआईपी के जरिये निवेशक नियमित रूप से भारतीय म्यूचुअल फंड में निवेश करते हैं। 8/4/3 उन कई स्ट्रैटेजी में से एक है, जिन्हें आप अपनी एसआईपी योजना से सर्वश्रेष्ठ फायदा पाने के लिए अपना सकते हैं। अगर आप इस स्ट्रैटेजी से एसआईपी में निवेश करेंगे तो आप फायदे में रह सकते हैं। आइए, इस पर चर्चा करता है।

क्या है 8/4/3 एसआईपी नियम

8/4/3 SIP नियम एक स्ट्रैटेजी है जो चक्रवृद्धि ब्याज की पावर के जरिये समय के साथ एसआईपी स्कीम में आपके निवेश की ग्रोथ को शो करती है। इस स्ट्रैटेजी के मुताबिक, आपका SIP निवेश तीन अलग-अलग फेज में बढ़ता है:

प्रारंभिक वृद्धि के वर्ष (1 से 8): आपका निवेश पहले 8 सालों में 12% के औसत सालाना रिटर्न के साथ लगातार बढ़ता है।

त्वरित वृद्धि के वर्ष (9-12): इस ग्रोथ फेज में, आपका निवेश दोगुना हो जाता है और चक्रवृद्धि ब्याज की पावर के कारण पहले 8 सालों में समान वृद्धि हासिल करता है।

घातीय वृद्धि के (13-15): आखिर 3 सालों में, आपका निवेश एक बार फिर दोगुना हो जाता है और पिछले चार सालों की ग्रोथ प्राप्त करता है।

एसआईपी निवेश के लाभ और 8/4/3 नियम

छोटी शुरुआत करने की अनुमति

एसआईपी के कई फायदों में से एक छोटी शुरुआत करने की सुविधा है। यानी आपको एसआईपी योजना में निवेश करने के लिए पहले से ही एक बड़ी निवेश योग्य सरप्लस (अधिशेष) की जरूरत नहीं है। आप रूपये 1000 प्रति माह से शुरुआत कर सकते हैं। यह हर महीने बड़ी राशि के लिए प्रतिबद्ध रहने की जरूरत के बिना वित्तीय समावेशन सुनिश्चित करता है।

चक्रवृद्धि की पावर का उपयोग

अपनी एसआईपी योजना में 8/4/3 नियम को लागू करने से आपको चक्रवृद्धि की शक्ति का उपयोग करने में मदद मिल सकती है। दुनिया के आठवें आश्चर्य के रूप में प्रचारित चक्रवृद्धि का धन सृजन पर मल्टीपल प्रभाव पड़ता है। चक्रवृद्धि के जरिये, आप मूल निवेश के साथ अर्जित ब्याज का निवेश करते हैं, और यह लंबे समय में आपके कोष को बढ़ाता है।

लंबी अवधि के निवेश को बढ़ावा देता है

लंबी अवधि का निवेश SIP के प्रमुख लाभों में से एक है। जब आप 8/4/3 नियम का पालन करके SIP के जरिये से लंबी अवधि के लिए अपने निवेश के लिए प्रतिबद्ध रहते हैं, तो आप आसानी से बाजार की अस्थिरता को पार कर सकते हैं और रुपया लागत औसत से लाभ उठा सकते हैं। यह आपके निवेश को औसत करने में मदद करता है।

मुद्रास्फीति का मुकाबला करने में मददगार

मुद्रास्फीति का धन पर विघटनकारी प्रभाव पड़ता है, और यह समय के साथ धन के मूल्य को कम करता है। 8/4/3 नियम को लागू करके चक्रवृद्धि की शक्ति पर सवार होकर, आप मुद्रास्फीति का मुकाबला कर सकते हैं और लंबी अवधि में मुद्रास्फीति-सूचकांकित रिटर्न हासिल कर सकते हैं। यह आपको विवेक के साथ दीर्घकालिक लक्ष्यों को पूरा करने में मदद करता है।

लुभावने विज्ञापनों से सतर्क रहें

किसी को झांसे में लेना कोई नई बात नहीं है। शायद यह काम आदिकाल से चलता आया है। आज भी मोटे धन का लालच देकर अर्थात आपको रातोंरात करोड़पति अरबपति बनाने के सब्जबाग दिखाकर लूटने वालों की कोई कमी नहीं है। कभी किसी आकर्षक योजना के नाम पर तो कभी किसी बड़ी कंपनी का में हिस्सेदारी का सपना दिखाकर आज भी लूट जारी है। ऐसी स्थिति में हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम अपने आप को इस मायावी जाल से कैसे बचाएं। ठगी के कई तरीके हैं जिनमें स्टॉक टिप्स का झांसा देना भी एक है। कई कंपनियां स्टॉक टिप्स देने के नाम पर ठगी करती हैं। इनके टेलीकॉलर आपको बताते हैं कि आपके पैसे लगभग छह महीने में दोगुने हो जाएंगे अगर आप इनके बताए शेयरों में निवेश करें और इनके बताए गए टिप्स के अनुसार चलें। जब आप ऐसी कंपनी के बैंक खाते में पैसे जमा करवा देंगे तो आपको एसएमएस के जरिए स्टॉक टिप्स आने शुरू हो जाएंगे।

लेकिन संभव है कई अन्य कंपनियां इसी तरह का लालच देते हुए अपना परिचालन कर रही हो। एक परिसंपत्ति वर्ग के रूप में इक्विटी निःसंदेह दीर्घावधि में सबसे बेहतर रिटर्न देता आया है लेकिन इसके रिटर्न की गारंटी नहीं दी जा सकती। बैंक और पोस्ट ऑफिस की निवेश योजनाएं, पीपीएफआदि जैसे विकल्प को छोड़ दें तो गोल्ड, इक्विटी, रियल एस्टेट आदि से गारंटीड रिटर्न की अपेक्षा नहीं की जा सकती हैं। न ही कोई सलाहकार इन पर मिलने वाले रिटर्न की गारंटी देता है। इसलिए, जब भी कोई आपसे कहे कि इन परिसंपत्ति वर्गों पर इतने रिटर्न की गारंटी दी जा रही तो आप संभल जाएं। यह ठगी का एक तरीका हो सकता है। यहां यह ध्यान देने योग्य बात यह है कि ऐसी ठग कंपनियां ज्यादातर छोटे शहरों से परिचालन करती हैं। इसकी वजह है कि वहां लोगों को आर्थिक मामलों की ज्यादा जानकारी नहीं होती और न ऐसी योजनाओं के छलावे के बारे में उन्हें पता होता है। कई मल्टी लेवल कंपनियां भी अपने पांव छोटे शहरों से ही पसारना शुरू करती हैं। छोटे निवेशक ऐसी योजनाओं के छलावे में न आएं जो अविश्वसनीय रिटर्न देने का दावा कर रही हो। ऐसी योजनाओं में रिटर्न मिलना तो दूर मूलधन वापस पाने का भी जोखिम रहता है।

निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

इक्विटी फंडों में निवेश के बाद धैर्य जरूरी

ज्यादातर निवेशक अधिक रिटर्न प्राप्त करने के उद्देश्य से इक्विटी की ओर आकर्षित होते हैं, लेकिन वह अक्सर एक बात भूल जाते हैं कि जहां ज्यादा रिटर्न मिलता है वहां जोखिम भी कम नहीं होता। यह जोखिम है अल्पावधि के उत्तर-चढ़ाव का। यही वजह है कि निवेशक अफरा-तफरी में बेच कर नुकसान उठाते हैं। उदाहरण के तौर पर, साल 2008 में अमेरिकी आर्थिक संकट के दौरान भारतीय शेयर बाजार में जबरदस्त गिरावट आई थी और ज्यादातर निवेशक इक्विटी जैसे एसेट क्लास से घाटे में निकले। ऐसे निवेशक शेयर बाजार में साल 2009 से शुरू हुई तेजी का लाभ उठाने से भी वंचित रहे। आपको जान कर आश्चर्य होगा कि साल 2008 से अब तक शेयर बाजार कई गुना हो चुका है।

बिजनेस चाहे कोई भी हो, उसमें जितने अधिक लाभ के अवसर होते हैं उतनी ही जोखिम की संभावना बढ़ जाती है। इक्विटी में निवेश के मामले में भी यह बात लागू होती है। ज्यादातर निवेशक अधिक रिटर्न प्राप्त करने के उद्देश्य से इक्विटी की ओर आकर्षित होते हैं, लेकिन वह अक्सर एक बात भूल जाते हैं कि जहां ज्यादा रिटर्न मिलता है वहां जोखिम भी कम नहीं होता। यह जोखिम है अल्पावधि के उत्तर-चढ़ाव का। यही वजह है कि निवेशक अफरा-तफरी में बेच कर नुकसान उठाते हैं।

उदाहरण के तौर पर, साल 2008 में अमेरिकी आर्थिक संकट के दौरान भारतीय शेयर बाजार में जबरदस्त गिरावट आई थी और ज्यादातर निवेशक इक्विटी जैसे एसेट क्लास से घाटे में निकले। ऐसे निवेशक शेयर बाजार में साल 2009 से शुरू हुई तेजी का लाभ उठाने से भी वंचित रहे। आपको जान कर आश्चर्य होगा कि साल 2008 से अब तक शेयर बाजार (यहां सीएनएक्स निफ्टी) लगभग दोगुना हो चुका है। लेकिन लाभ उन्हीं को मिला जो मार्केट में टिके रहे।

क्या इक्विटी निवेश में भी जोखिम कम किया जा सकता है ?

यहां सवाल उठता है कि एक निवेशक इक्विटी के अल्पावधि के जोखिमों से बचते हुए किस प्रकार लाभ उठा सकता है? इसका सीधा सा उत्तर है कि इक्विटी जैसे एसेट क्लास में दीर्घावधि के लिए निवेश करें। इतिहास इस बात का गवाह है कि इक्विटी में दीर्घावधि का निवेश सबसे अधिक लाभ देने वाला रहा है। अगर आप देखेंगे तो पता चलेगा कि भले ही अल्पावधि में निफ्टी में उतार-चढ़ाव आते रहे हों लेकिन

दीर्घावधि में यह हमेशा ही सकारात्मक रहा है। इसके अलावा, अगर हम सीएनएक्स निफ्टी 23 साल के इतिहास में डेली रॉलिंग आधार पर 10 साल के रिटर्न का विश्लेषण करें तो यह सूचकांक औसत 12 प्रतिशत का सालाना रिटर्न देता नजर आता है। यहां निवेश की पहली शर्त ही धैर्य है।

इक्विटी में निवेश करने का सबसे अच्छा जरिया है म्यूचुअल फंड :

इक्विटी में निवेश करने के दो तरीके हैं- सीधे तौर पर या फिर म्यूचुअल फंडों के जरिए। ध्यान रखिए कि सीधे तौर पर इक्विटी में निवेश करना न केवल जटिल है बल्कि जोखिमपूर्ण भी है। इसकी लागत भी अधिक होती है। उदाहरण के तौर पर, निवेशकों को कई बातों जैसे किसी शेयर का प्रदर्शन बुरा चल रहा है या अच्छा, डी-लिस्टिंग आदि का ध्यान रखना होता है। दूसरे शब्दों में कहें तो निवेशकों को किसी खास शेयर से जुड़ी खबरों के आधार पर विवेक से निर्णय लेना होता है। इसके अलावा, कुछ शेयरों की कीमतें बहुत अधिक हैं। इस वजह से भी कई निवेशक ऐसे शेयरों की खरीदारी नहीं कर पाते। अगर इसे खरीद भी लेते हैं तो इससे पोर्टफोलियो कंसिंट्रेशन बढ़ जाता है। इसलिए, छोटे और खुदरा निवेशकों के लिए सबसे अच्छा रहेगा कि वह इक्विटी में निवेश के लिए फंडों को जरिया बनाएं। इसके कई लाभ है जैसे डाइवर्सिफिकेशन (जिसकी मदद से आप कंसिंट्रेशन रिस्क कम कर सकते हैं), प्रोफेशनल मैनेजमेंट, कम पैसों के निवेश की सुविधा, कर-सक्षमता और शेयर बाजार की दैनिक गतिविधियों को ट्रैक करने से राहत। बाजार में कई इक्विटी ओरिएंटेड म्यूचुअल फंड हैं जो ज्यादातर निवेशकों की रिस्क रिटर्न प्रोफाइल के अनुरूप हैं।

एसआईपी के फायदे आज म्यूचुअल फंड में

निवेश का सबसे लोकप्रिय तरीका एसआईपी है। अनुशासित तरीके से लंबे समय के लिए निवेशित रहने के लिए निवेशक सिस्टमेटिक इंवेस्टमेंट प्लान (सिप) का सहारा ले सकते हैं जिसका पेशकश म्यूचुअल फंड कंपनियां करती हैं। इक्विटी म्यूचुअल फंडों में एक निश्चित अंतराल पर तय राशि का निवेश करने से रूपी कॉस्ट एवरेजिंग यानी एनएवी कम होने पर ज्यादा यूनिटों की खरीदारी और एनएवी अधिक होने पर कम यूनिटों की खरीदारी का लाभ मिलता है।

हड़बड़ी में न उठाएं कोई कदम तेजी और मंदी

बाजार का अहम हिस्सा हैं। शेयर बाजार के उतार-चढ़ाव के कारण किसी निवेशक को हड़बड़ा कर घाटा सहते हुए निकासी नहीं करनी चाहिए। धैर्य के साथ लंबे समय तक निवेश को बनाए रखिए तभी आप निश्चित तौर पर लाभप्राप्त कर सकते हैं। इक्विटी फंड का यही फॉर्मूला है लंबे समय के लिए निवेश।

होम लोन पर महिलाओं को मिलते हैं ये बेनिफिट्स, इन वजहों से आपको करना चाहिए अप्लाई

देश में आज महिलाएं आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो रही हैं, वे अपने परिवार के लिए घर खरीदने जैसे जीवन के बड़े फैसले भी ले रही हैं। यही वजह है कि बैंक या अन्य वित्तीय संस्थान महिलाओं के लिए कुछ खास होम लोन बेनिफिट उपलब्ध करा रहे हैं और समय-समय पर स्पेशल योजनाएं लाकर महिलाओं को अपना घर बनाने में मदद कर रहे हैं। अगर आप भी एक कामकाजी और सक्षम महिला हैं तो आप होम लोन के लिए अप्लाई करते समय मिलने वाली सुविधाओं का फायदा उठा सकते हैं।

को-बॉरोअर के रूप में महिलाओं को लाभ

महिलाएं उधारकर्ता और सह-उधारकर्ता (को-बॉरोअर) दोनों के रूप में आवेदन कर सकती हैं। उधारकर्ता और सह-उधारकर्ता की संयुक्त आय लोन मिलने की संभावना को बढ़ा सकती है जिसका अर्थ है ज्यादा लोन पात्रता और परिवार के लिए उपयुक्त घर चुनने में अधिक लचीलापन। साथ ही महिलाओं को भी होम लोन रीपेमेंट कर कटौती का लाभ मिलता है, जिसमें मूलधन और ब्याज में अधिकतम कटौती मशः 1.5 लाख रुपये और 2 लाख रुपये है।

कम स्टाम्प ड्यूटी

केंद्र और राज्य सरकारें भी महिलाओं के लिए घर

के स्वामित्व को प्रोत्साहित कर रही हैं। महिलाओं के लिए होम लोन बेनिफिट में कई राज्य सरकारों द्वारा 1-2% तक कम स्टाम्प ड्यूटी शुल्क शामिल है। इस प्रकार एक महिला 80 लाख रुपये की संपत्ति को रजिस्ट्री कराती है पर 80,000 रुपये से 1,60,000 रुपये तक बचा सकती है।

होम लोन अप्रूवल जल्दी मिलने की संभावना

आवेदक/सह-आवेदक के रूप में अगर ग्राहक एक महिला है तो होम लोन अप्रूव होने की संभावना पर पॉजिटिव असर पड़ता है। इसके पीछे कुछ खास कारण हैं जिसमें महिलाओं की अनुशासित बचत की प्रदर्शित आदतें, अनावश्यक ऋण से बचने की प्रवृत्ति और वित्त का उनका विवेकपूर्ण प्रबंधन शामिल है। साथ ही डेटा, महिला उधारकर्ताओं के बीच कम डिफॉल्ट दरों को दर्शाता है, जिससे उन्हें होम लोन ऑफर देने में वित्तीय संस्थानों का विश्वास और भी बढ़ जाता है।

Mutual Fund investments are subject to market risks, read all scheme related documents carefully.

कम कमाई में बचत करना बहुत जरुरी है

बचत करने की सर्वाधिक जरुरत कम कमाई करने वालो को ज्यादा हैं, और वो छोटी छोटी बचत करके ही धन एकत्रित कर सकते हैं

कई लोग कम कमाई या कम वेतन समझ कर बचत नहीं करते, ये लोग हमेशा यह बोलते हैं की हमारे पास खर्च होने के बाद कुछ बचता ही नहीं है, बचत कहाँ से करे ?

यहाँ पर इन लोगो की दलील उस समय काम नहीं आती क्यों की जब आपके बच्चे उच्च शिक्षा हेतु फीस मांगते हैं या कभी आप या आपके परिवार में से कोई बीमार होता हैं, या आपके परिवार में कोई अचानक विपत्ति आती हैं या आपके परिवार में को समारोह हेतु धन की जरुरत होती हैं या आपके रिटायमेंट की समय पर आपका सहारा कौन बनेगा ? इसे अनेक सवाल हैं जो वर्तमान आर्थिक युग में समय आने पर आपको परेशानी में लाकर खड़ा कर देंगे।

इस लिए मेरे मानने में बचत करने की सर्वाधिक जरुरत केवल कम कमाई करने वालो को ही हैं, और वो छोटी छोटी बचत करके ही धन एकत्रित कर सकते हैं। इस समय बचत करने के कई सुगम मार्ग हैं, और खर्चे का कुछ हिस्सा मानकर प्रतिमाह बचत करे या यह सोचे की प्रतिमाह इतना वेतन या कमाई कम हो रही हैं या प्रति माह जो बचत कर रहे हैं वह भी खर्च समझ कर ही करे, उसे घटाकर ही खर्च करे, वर्तमान में कुछ रुपये प्रति माह से ही बचत की शुरुआत की जा सकती हैं, और लम्बे समय में प्रतिमाह जमा रकम पर अच्छा लाभ मिलता हैं। यह रकम देश की नामी कंपनियों में जमा की जाती हैं, प्रति माह जमा होने वाली रकम पर ओसत आय होगी और इसी योजनाये कई कंपनियों की म्यूचुअल फंड की स्कीमो में होती हैं।

अत: आप नये वितीय वर्ष में नियम ले की प्रति माह मुझे मेरे और परिवार के सुखद भविष्य के लिए प्रतिमाह कुछ न कुछ बचत करनी हैं। म्यूचुअल फंडो ने पिछले 10-15 वर्षो में बहुत अच्छा रिटर्न दिया हैं और कम से कम इसके बराबर भविष्य में भी देने की उम्मीद हैं हालाँकि म्यूचुअल फंडो में रिटर्न कम या अधिक हो सकता हैं परन्तु प्रति माह लगातार निवेश करते हैं तो एक ओसत रिटर्न मिलता हैं, जो प्राय: बैंक व डाकघर की मासिक जमा योजनाओ से अधिक ही हैं और रकम पर मिलने वाला प्रतिफल पूर्णतया करमुक्त होता हैं।

निवेश किस योजना में करे? वर्तमान में लोगो की सोच यह रहती हैं की हमें रिटर्न भी अच्छा मिले,पैसे भी सुरक्षित रहे और फिक्स ब्याज (गारंटिड लाभ) भी मिलता रहे, यहाँ पर यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी की जहाँ जोखिम होती हैं, वही रिटर्न भी अधिक होता हैं।

निवेश हमेशा अपनी जरुरत के हिसाब से करे की भविष्य में कब और कितना रूपया चाहिए उस हिसाब से निश्चित मात्रा में निवेश करे।

निवेश करने से पहले कुछ बाते हैं जो सोच कर निवेश करे जैसे समय, रिटर्न, जोखिम क्षमता, स्कीम का पूर्ण विवरण एवं कंपनी का कार्य कलाप जानकर ही निवेश करे ।

सिप के फायदे:

(i) छोटा छोटा निवेश भविष्य में अच्छा प्रतिफल प्रदान करता हैं

(ii) अनुशासित निवेश की आदत

(iii) **भावनात्मक निवेश से रक्षा:** अधिकांश लोग जब बाजार बढता है तब निवेश प्रारम्भ करते हैं, जिसमे रिस्क अधिक रहता है, जबकि सिप में उच्च व निम्न स्तर पर निवेश होता रहता हैं।

म्यूचुअल फंड निवेश बाजार जोखिम के अधीन हैं, जिसका अर्थ है कि आपके निवेश का मूल्य उतार-चढ़ाव कर सकता है, जिससे संभावित रूप से नुकसान हो सकता है। निवेश करने से पहले सभी योजना-संबंधित दस्तावेजों को ध्यान से पढ़ना और इसमें शामिल जोखिमों को समझना महत्वपूर्ण है।

ज्ञान के मोती

1. **बचत-** खर्च करने के पश्चात जो बचे उसे बचत ना करे। बल्कि बचत करने के पश्चात जो बचे उसे ही खर्च करे।

2. **खर्च-** खर्च आवश्यक व दीर्घकालीन उपयोगी वस्तुओं पर ही करें। अन्यथा बिना जरूरत की चीजों पर खर्च करेंगे तो शीघ्र बेचना पड़ सकता है। या कबाड़ी को देना पड़ सकता है।

3. **कमाई-** वर्तमान समय में कभी भी एक अकेली आय पर निर्भर न रहे। वरन् यह जरूरी है। अपने निवेश को अपनी आय का दूसरा साधन (जरिया) बनावें ।

4. **जोखिम -** जीवन में हर मोड़ पर जोखिम है । अतः थोड़ा जोखिम

लेना जरूरी है। क्योंकि जोखिम से रिटर्न की सम्भावना अधिक रहती है।

5. **निवेश -** सभी सेव को एक टोकरी में रखने से उनके खराब होने की सम्भावना अधिक रहती है। अर्थात् निवेश भी डाइवर्सिफाइड (विभिन्न सेक्टरों) में होना चाहिये।

निवेशकों हेतु ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण बातें

सम्मानीय निवशकों से निवेदन

सम्मानीय ग्राहक महोदय हम आपको बेहतर सुविधा प्रदान करने हेतु निम्न बातों से अवगत कराना चाहते है, अगर इनमें कोई भी परिवर्तन हो तो कृपया तुरंत हमें सूचित करें, अनयथा आपको उचित सुविधा मिलने में देरी हो सकती है, इस हेतु आपक हमसे तुरंत सम्पर्क करें, अगर....

परिवर्तन होने पर: आपके पते, टेलीफोन, मोबाइल नंबर, ई-मेल, आई डी बदलने पर।

अवयस्क के नाम से अगर आपने निवेश अवयस्क बच्चे के नाम से कर रखा है और बच्चा अब वयस्क हो गया हो तो म्यूचुअल फंड के रिकोर्ड में तुरंत होल्डिंग स्टेटस बदलाये।

शादी होने पर : अगर आपने अपनी लड़की के नाम से निवेश कर रखा हैं और शादी के बाद सरनेम बदल गया हो तो तुरंत म्यूचुअल फंड के रिकार्ड में तुरंत होल्डिंग नाम बदलाये।

मृत्यु होने पर अगर आपके परिवार जन ने म्यूचुअल फंड में निवेश कर रखा हो और मृत्यु हो गई हो तो उनके फोलिओं में होल्डिंग स्टेटस और नॉमिनी तुरंत बदलाएं।

उद्देश्य बदलने पर : अगर आपने किसी निश्चित उद्देश्य के लिए निवेश किया हैं और उसमें कोई बदलाव हुआ हो तो कृपया निवेश की गई योजना में बदलाव करवा ले।

बैंक खातों में बदलाव होने पर :अगर आपके बैंक खाते में किसी भी प्रकार का परिवर्तन हुआ हो जैसे पहले खाता संख्या छोटी थी और अब बड़ी हो गई हैं या खाता संख्या या शाखा बदल गई हो, या बैंक खाता बंद करने जा रहे हैं, तो तुरंत हमें सूचित करें क्योंकि म्यूचुअल फंड में बैंक विवरण में बदलाव करने की दशा में पुराने और नए बैंक का प्रूफ (दोनों की चेक पर नाम प्रिंटेड और पास बुक की कॉपी) देना अनिवार्य होता हैं, और आपने खाता बंद करा दिया हो और कोई भी प्रूफ न हो तो बैंक से खाता बंद करने का प्रमाण पत्र लेना होगा।

हस्ताक्षर न मिलने पर: अगर आपने रीडम्प्सन दिया हैं और किये गये हस्ताक्षर म्यूचुअल फंड के रिकोर्ड से मेल नहीं खा रहे हो तो आपको फोलिओं में दिए गए बैंक से ही हस्ताक्षर प्रमाणित करने होंगे और साथ ही प्रमाणित करने वाले बैंक अधिकारी का नाम, मोहर, पद्नाम और एमप्लोयी कोड नंबर लिखवाना अनिवार्य होता है।

जानकारी लेना : आपको अपने फंड की एन.ए.वी. स्टेटमेंट / डिविडेंड / रीडम्प्सन / पोर्टफोलियो का विवरण लेना हो तो कृपया फोलियो नंबर और कंपनी का नाम बताकर आप हमारे ऑफिस नं. LAND LINE : 0141-2360571, M. 9929065924, पर तीन बजे बाद पूछ सकते हैं। आप हमारी वेबसाईट www. mftoday.com से आप 24/365 कभी भी अपना पोर्टफोलियों देख सकते हैं।

खराब स्कीम की दशा में :अगर आपने किसी और से भी म्यूचुअल फंड खरीद रखे हो तो उसकी जानकारी हमें बताये ताकि हो सकता है कि कोई स्कीम सही परफॉर्म नहीं कर रही या खराब हो, जिसमें रिटर्न ठीक न आ रहा क्योंकि अच्छे फंड और खराब फंड का प्रदर्शन म्यूचुअल फंड में कई कारणों से होता है।

निवेश किसमें करें: लक्ष्य, जोखिम, क्षमता के अनुरूप ही निवेश हमेशा प्रमाणित वित्तीय योजनाकार से सलाह लेकर ही करें ताकि आपका पैसा सही जगह निवेश हो।

स्कीम का प्रदर्शन : अच्छे व खराब फंडों का प्रदर्शन कई कारण से होता है। कंपनी की स्कीम की रणनीति में बदलाव, कंपनी के फंड मैनेजर का बदलाव, कंपनी के प्रबंधन में बदलाव, फंड के शेयर होल्डिंग पैटर्न में बदलाव जिसमें स्कीम का प्रदर्शन ठीक नहीं रहता है, और बाजार में भी परिवर्तन होता रहता हैं, जिससे निवेश पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है, इस हेतु हम समय-समय पर निवेश पत्रिका में जानकारी देते रहते हैं।

लेखक : डॉ. रमेश मालू

***निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।**

शेयर बाजार में भारी उतार-चढ़ाव वाले दौर से न घबराएं

सुनी सुनाई बातों के बजाय फंडामेंटल पर ध्यान दें, अपनाएं ये 7 कारगर रणनीतियां

कुछ समय से शेयर बाजार में गिरावट के चलते ज्यादातर रिटेल निवेशकों के पोर्टफोलियो की वैल्यू कम हो गई है। ऐसे समय में घबराकर बाजार से निकलना या निवेश बंद करना समझदारी नहीं है। ऐतिहासिक आंकड़े बताते हैं कि जितना लंबे समय तक निवेशित रहेंगे, जोरदार रिटर्न की संभावना उतनी ही ज्यादा होगी। समझदार निवेशक बाजार में उतार-चढ़ाव के दौरान भी नियमित निवेश जारी रखते हैं। नियमित निवेश, SIP आदि जारी रखने का मतलब है कि जब बाजार गिर रहा हो तो आप शेयर या म्यूचुअल फंड की यूनिट खरीदने के लिए कम पैसे चुकाते हैं।

बाजार ऊपर जाने पर आपको इनकी ज्यादा वैल्यू मिलती है। जब तक आपको जीवन के जरूरी खर्च पूरा करने के लिए पैसे की सख्त जरूरत न हो, निवेश को घाटे में बेचना ठीक नहीं है। आइए समझते हैं कि कुछ रणनीतियों के जरिए किस तरह भारी उतार-चढ़ाव के दौर में भी ज्यादा नुकसान से कैसे बच सकते हैं। सतर्क रहें, अनुशासित रहें और आज के अस्थिर परिदृश्य में आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने के लिए आगे बताए गए सुझावों का लाभ उठाएं...

1: सुनी सुनाई बातों के बजाय फंडामेंटल पर ध्यान दें: सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स या मार्केट की सुनी-सुनाई कहानियों से प्रेरित निवेश अक्सर निराश करते हैं।

क्या करें: हमेशा कंपनी के फंडामेंटल्स देखें। बिजनेस के कोर फाइनेंशियल और ऑपरेशनल पहलू होते हैं। इसमें कंपनी के फाइनेंशियल स्टेटमेंट, बिजनेस मॉडल, इंडस्ट्री की स्थिति, मैनेजमेंट और प्रतिस्पर्धा की स्थिति शामिल है। यदि ये अच्छे हों तो निवेश कर सकते हैं।

2: 'किसी भी कीमत पर खरीदें' के जाल से बचें : वैल्युएशन अभी सही है या नहीं, ये जाने बिना कोई शेयर न खरीदें। भले ही ऐसी कंपनियों ने ऐतिहासिक रूप से मजबूत रिटर्न दिया हो, पर इनमें निवेश से पहले पता करें कि वे अभी रिटर्न की उम्मीदें पूरी कर सकते हैं या नहीं।

ध्यान रखें: किसी शेयर या कंपनी का पिछला प्रदर्शन भविष्य के रिटर्न की गारंटी नहीं देता है।

3: गिरावट में भी SIP बंद न करें: बाजार गिरने के कारण SIP रोकना एक बहुत बड़ी गलती है।

4: डाइवर्सिफिकेशन सबसे महत्वपूर्ण: रणनीति पोर्टफोलियो डाइवर्सिफाई में शेयर, म्यूचुअल फंड, सोना-चांदी, रियल एस्टेट जैसी अलग-अलग एसेट क्लास शामिल करें।

टिप्स 5: गैर-जरूरी एसेट बेचकर पोर्टफोलियो रीबैलेंस करें: लंबे समय से नुकसान में चल रहे या जल्द बढ़ने की संभावना न दिखाने वाली एसेट पोर्टफोलियो हटा दें। इस रकम का इस्तेमाल सुरक्षित निवेश में करें या एफडी या ओवरनाइट फंड में सुरक्षित रख दें।

6: धैर्य रखें: ये आपकी सबसे बड़ी संपत्ति बाजार में मंदी का दौर ज्यादा लंबा नहीं टिकता। डॉट-कॉम बबल (2000), 9/11 हमला, 2008 का वित्तीय संकट, कोविड क्रैश (2020) और रूस-यूक्रेन युद्ध (2022) इसके उदाहरण हैं। मतलब धैर्य रखकर अनुशासित निवेशक हमेशा अच्छा रिटर्न पाते हैं।

7: रियल एस्टेट से सीख लें: लंबी होल्डिंग रखें आप अपने घर या फ्लैट की कीमतों में रोजाना उतार-चढ़ाव ट्रैक नहीं करते। इसी तरह म्यूचुअल फंड और शेयरों में निवेश के लिए भी रियल एस्टेट जैसा धैर्य रखें और रोज-रोज प्राइस मॉनिटर करने से बचें।

होमलोन समय से पहले चुकाने के बजाय निवेश फायदेमंद, सुरक्षित कर्ज पर ब्याज कम लगता है, जबकि निवेश पर मिल सकता है ज्यादा रिटर्न

आपके पास कुछ अतिरिक्त रकम आ गई है और आप चाहते हैं कि होमलोन को फोरक्लोज यानी समय से पहले बंद कर दिया जाए या प्री-पेमेंट किया जाए। लेकिन, प्री-पेमेंट से पहले इससे जुड़े सभी पहलुओं पर विचार कर लेना ठीक रहेगा।

हो सकता है उस रकम को निवेश करके प्री-पेमेंट से मिलने वाले फायदे से ज्यादा लाभ मिल जाए। ध्यान रखें कि अधिकांश वित्तीय संस्थान लोन के शुरुआती वर्षों में ब्याज की ज्यादा से ज्यादा रकम वसूल कर लेते हैं। ऐसे में बहुत बाद में प्री-पेमेंट या फोरक्लोजर से ज्यादा फायदा नहीं होगा।

होम लोन प्री-पेमेंट चार्ज होम लोन देने वाले ज्यादातर वित्तीय संस्थान प्री-पेमेंट चार्ज लगाते हैं। वर्तमान में फ्लोटिंग-रेट होम लोन के लिए आंशिक या पूरा प्री-पेमेंट करने पर कोई पेनाल्टी नहीं लगती। हालांकि, फिक्स्ड रेट वाले होम लोन के लिए बैंक फोरक्लोजर चार्ज लगाते हैं। यह चार्ज अलग-अलग बैंक में अलग-अलग हो सकता है।

नियमों के मुताबिक, खुद के फंड से प्री-पेमेंट कर रहे हैं तो वित्तीय संस्थान पेनाल्टी नहीं लगा सकते। ये पेनाल्टी तभी लगाई जा सकती है, जब आप किसी दूसरे संस्थान से होम लोन रीफाइनेंस कराते हैं।

कैसे लगाए जाते हैं प्री-पेमेंट चार्ज: मूलधन का प्रतिशत: अधिकतर वित्तीय संस्थान बकाया मूलधन का एक निश्चित प्रतिशत (1% से 3% के बीच) चार्ज लगाते हैं।

निश्चित शुल्क: कुछ वित्तीय संस्थान निश्चित शुल्क तय सकते हैं। मसलन पहले वर्ष 50,000 रुपए और बाद के वर्षों में प्री-पेमेंट करने पर इससे कम चार्ज लगेगा।

कुछ माह का ब्याज: कुछ मामलों में बैंक या फाइनेंस कंपनी प्री-पेमेंट करने पर बकाया कुछ महीनों का ब्याज पेनाल्टी के रूप में वसूल कर सकती है।

इन पहलुओं पर भी करें विचार

वित्तीय लक्ष्य: होम लोन का प्री-पेमेंट करने से पहले विचार कर लें कि निकट भविष्य में आपको किसी बड़ी रकम की एकमुश्त जरूरत तो नहीं पड़ सकती है। ऐसे में प्री-पेमेंट के लिए तय की गई रकम अन्य वित्तीय जरूरतों के लिए सुरक्षित रख सकते हैं।

निवेश के अवसर: आमतौर पर होम लोन का ब्याज कम होता है। ऐसे में होम लोन प्री-पेमेंट करने के बजाय अगर उस रकम का निवेश ज्यादा रिटर्न वाले साधन में करेंगे तो हो सकता है कि ज्यादा फायदे में रहें।

निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

होम लोन ट्रांसफर कराने से पहले इन बातों पर जरूर करें गौर, कहीं पछताना न पड़ जाए

मौजूदा होम लोन बैलेंस ट्रांसफर करना आपके लिए बेहतर साबित हो सकता है। एक वित्तीय संस्थान से दूसरे में होम लोन ट्रांसफर करने से आपको राहत मिल सकती है। अगर आप भी अपना होम लोन किसी और बैंक या संस्थान में स्विच या ट्रांसफर करना चाहते हैं तो यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप सबसे अच्छा डील हासिल कर सकें, सभी उपलब्ध होम लोन की तुलना करना अहम है। आइए, हम यहां कुछ ऐसी बातों पर चर्चा करते हैं जिसपर गौर करने के बाद ही आपको होम लोन बैलेंस ट्रांसफर का विकल्प चुनना चाहिए।

कम ब्याज दर के लिए बात करें

होम लोन बैलेंस ट्रांसफर पर फैसला करने से पहले, अपने मौजूदा बैंक के साथ कम ब्याज दर के लिए बातचीत करने की कोशिश करें। अगर आपने उनके साथ अच्छे संबंध रखे हैं, तो वे आपके क्रेडिट हिस्ट्री और रीपेमेंट क्षमता पर अनुकूल रूप से विचार करने के लिए अधिक इच्छुक हो सकते हैं। एक बात ध्यान रहे, रेपो रेट-लिंक्ड लेंडिंग रेट लोन सीधे भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की रेपो दरों से संबंधित है। रेपो दर वह दर है जिस पर बैंक केंद्रीय बैंक यानी आरबीआई से धन उधार लेते हैं। इसका मतलब है कि आपके होम लोन पर ब्याज दरें रेपो दर में उतार-चढ़ाव से काफी प्रभावित होती हैं। जब रेपो दर में कमी होती है, तो यह ब्याज दरों में कमी लाकर आपके पक्ष में काम कर सकती है जिससे आपकी EMI का बोझ कम हो सकता है।

सिबिल स्कोर की जांच करें

होम लोन ट्रांसफर के लिए अप्लाई करने से पहले अपने सिबिल स्कोर की समीक्षा करना अहम है। ये स्कोर आपके ट्रांसफर आवेदन के लिए एक महत्वपूर्ण पात्रता कारक के रूप में काम करते हैं। कम `डिट स्कोर आपके ट्रांसफर आवेदन को काफी प्रभावित कर सकता है, यह दर्शाता है कि आप ट्रांसफर के लिए उतने योग्य नहीं हो सकते हैं।

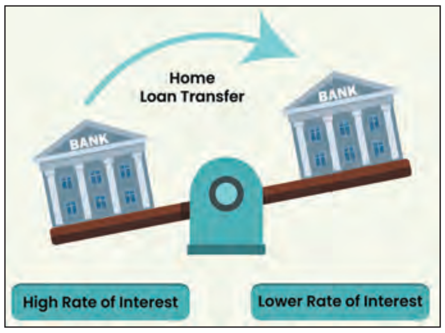

शामिल शुल्कों को जान लें

जब किसी वित्तीय संस्थान से लोन लेने पर विचार किया जाता है, तो इसमें शामिल अतिरिक्त शुल्कों के बारे में जानना जरूरी है। अगर आप अपने होम लोन को किसी दूसरे बैंक को ट्रांसफर करने के बारे में सोच रहे हैं, तो आपको प्रोसेसिंग फीस, आवेदन शुल्क, प्रशासन शुल्क, निरीक्षण शुल्क और बहुत कुछ सहित विभिन्न शुल्कों का सामना करना पड़ सकता है। यह आपके वर्तमान ऋणदाता और नए ऋणदाता दोनों पर लागू होता है। हमेशा सुनिश्चित करें कि आप जो कुल राशि चुकाएंगे वह आपकी ब्याज राशि से कम हो।

नियम और शर्तों को ध्यान से पढ़ें

होम लोन ट्रांसफर करने के लिए आवेदन करते समय ज्यादातर लोग एक आम गलती करते हैं, वह है नियम और शर्तों वाले भाग को ध्यान से पढ़ते नहीं हैं। यह एक बड़ी लापरवाही हो सकती है क्योंकि इस भाग में सभी महत्वपूर्ण जानकारी होती है जिस पर सावधानीपूर्वक विचार किया जाना चाहिए।

Since 1992
maloo
Trust, Experience & Integrity

There are 4 ways to be Rich:-

1. YOU MAY BORN RICH,
2. YOU MAY MARRY RICH,
3. YOU MAY WIN A LOTTERY
4. YOU MAY START EARLY SIP FOR LONG TERM

I THINK ONLY "LAST ONE" IS IN YOUR HANDS.
SO START INVESTING THROUGH SIP IN EQUITY FUNDS FOR LONG TERM ACCORDING YOUR FINANCIAL GOAL WITH ADVICE OF AN EXPERT.

CONTACT TO START SIP. 8287 099 099,
EMAIL:SERVICES@MFTODAY.COM

MUTUAL FUND INVESTMENTS ARE SUBJECT TO MARKET RISKS, READ ALL SCHEME RELATED DOCUMENTS CAREFULLY.

Personal Loan के मामले में कभी ना करें ये 6 गलतियां वरना पड़ेगा पछताना

इस समय पर्सनल लोन लेना सबसे आसान हो गया है। अगर आप वेतनभोगी कर्मचारी हैं, तो आपको बैंक की तरफ से प्री अप्रूव्ड पर्सनल लोन के ऑफर मिल जाते हैं। ऐसे में आप मोबाइल पर एक क्लिक से पर्सनल लोन ले सकते हैं और तुरंत पैसा आपके खाते में आ जाएगा। आजकल कम क्रेडिट स्कोर होने के बावजूद बैंक पर्सनल लोन ऑफर कर देते हैं। ऐसे में लोगों के लिए यह कर्ज लेना आसान हो गया है और वे धड़ल्ले से पर्सनल लोन ले रहे हैं। लेकिन क्या यह सही है? पर्सनल लोन सबसे अधिक ब्याज दर वाला लोन माना जाता है, इसलिए आपको यह तब ही लेना चाहिए, जब आपके पास और कोई विकल्प नहीं हो। आज हम आपको कुछ ऐसी गलतियों के बारे में बताएंगे जो अक्सर पर्सलन लोन ग्राहक करते हैं और फिर बाद में पछताना पड़ता है।

बैंकों के ऑफर्स की तुलना किये बिना लोन ले लेना

कई बार लोग बिना सोचे-समझे जो ऑफर मिलता है, उसे एक्सेप्ट कर लेते हैं। पर्सनल लोन लेने से पहले ग्राहक को विभिन्न बैंकों और एनबीएफसी के पर्सनल लोन ऑफर्स की तुलना कर लेना चाहिए। कई बैंक ग्राहकों के लिए आकर्षक ऑफर्स लेकर आते हैं। इनमें प्रोसेसिंग फीस में पूरी छूट या थोड़ी छूट, कम ब्याज दर, फोरक्लोजर फीस से छूट, गिफ्ट वाउचर आदि शामिल हैं। जहां आपको सबसे अधिक फायदा दिख रहा हो, वहां से पर्सनल लोन लें।

पर्सनल लोन की रकम का दुरुपयोग

आसानी से मिल जाने के कारण लोगों को पर्सनल लोन की रकम की कद्र नहीं होती है और वे इस पैसे का दुरुपयोग शुरू कर देते हैं। पर्सनल लोन की रकम का उपयोग कभी भी शेयर ट्रेडिंग, फेंटेसी स्पोर्ट्स गेम, सट्टेबाजी, जुआ आदि जैसे कामों में नहीं करना चाहिए। इन कामों में पैसा खोने की संभावना काफी अधिक होती है। साथ ही आपको पर्सनल लोन की रकम से अनावश्यक खरीदारी करने से भी बचना चाहिए। पर्सनल लोग की रकम से जरूरत ना होने पर भी महंगे गैजेट्स और मोबाइल फोन्स खरीदना सही नहीं है। कुछ लोग ट्रिप पर जाने के लिए पर्सनल लोन ले लेते हैं। दरअसल यह एक ऐसा काम है जिसके लिए आपको पहले से बचत करनी चाहिए और प्लानिंग करनी चाहिए।

जरूरत से ज्यादा रकम का लोन लेना

बैंक या एनबीएफसी आपको आपकी कैपेसिटी के अनुसार पर्सनल लोन ऑफर करते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि आप जरूरत से ज्यादा लोन ले लें। आपको जितनी रकम की जरूरत हो उतने का ही पर्सनल लोन लें, भले आपको कितनी भी अधिक रकम के लोन का ऑफर आया हो।

EMI में डिफॉल्ट करना

जब आपने कोई लोन लिया है, तो आप यह सुनिश्चित करें, की तय तारीख पर आपके अकाउंट में इतने पैसे हों, कि EMI कट जाए। आप उसी हिसाब से अपना बजट बनाकर चलें। पर्सनल लोन ईएमआई डिफॉल्ट होने से आपके ऊपर पेनल्टी लगती है। इससे आपका क्रेडिट स्कोर भी गिर जाता है। अगर आप ईएमआई चुकाने में 90 दिनों से ज्यादा की देरी करते हैं, तो आपको डिफॉल्टर घोषित कर दिया जाएगा। आपके क्रेडिट स्टोर में यह डिफॉल्ट स्थिति वर्षों तक दिखाई देगी।

बिना जरूरत के लोन की अवधि को बढ़ाना

कभी-कभी ग्राहक अपने पर्सनल लोन रिपेमेंट्स को रिस्ट्रक्चर करवाते हैं। इसमें लोन की अवधि बढ़ाई जाती है, जिससे ईएमआई की रकम घट जाती है। इससे आपका लोन लंबे समय तक चलता रहता है। इसका नुकसान यह है कि आपको ब्याज के रूप में काफी अधिक रकम देनी पड़ जाएगी। ग्राहकों को इस ऑप्शन को केवल तभी चुनना चाहिए, जब आप वित्तीय संकट से जूझ रहे हों।

एक साथ कई पर्सनल लोन लेना

कुछ लोग छोटी-छोटी जरूरतों के लिए पर्सनल लोन ले लेते हैं। ऐसे में उनके पास कई पर्सनल लोन हो जाते हैं और उन्हें एक बड़ी रकम ईएमआई के रूप में चुकानी होती है। इससे आपका बजट गड़बड़ा सकता है। अगर संभव हो तो नया लोन लेने से पहले मौजूदा लोन को खत्म करने की कोशिश करें।

क्रेडिट लिमिट का कम इस्तेमाल बढ़ाएगा सिबिल स्कोर

30% लिमिट का ही इस्तेमाल करें, 4 जरूरी बातें जिनसे मेंटेन रहेगा क्रेडिट स्कोर

भविष्य में लोन पाने और नए क्रेडिट कार्ड बनवाने के लिए हम हाई सिबिल स्कोर मेंटेन करने की कोशिश करते हैं। इसके लिए हम ये ध्यान रखते हैं कि लोन और क्रेडिट कार्ड का पेमेंट सही समय पर हो। इसके बावजूद भी कई बार सिबिल स्कोर कम हो जाता है।

सिबिल स्कोर पर नेगेटिव इंपैक्ट डालने वाले 5 फैक्टर
1 लेट या मिस्ड पेमेंट
2 उपलब्ध क्रेडिट लिमिट का ज्यादा इस्तेमाल
3 बकाया पेमेंट वाले मल्टीपल क्रेडिट अकाउंट
4 कम समय में ज्यादा क्रेडिट के लिए अप्लाई करना
5 ज्यादा बकाया राशि के साथ क्रेडिट अकाउंट

फाइनेंशियल एक्सपर्ट बताते हैं कि सही समय पर पेमेंट के साथ क्रेडिट कार्ड होल्डर को ये भी ध्यान रखना चाहिए कि वो अपनी कार्ड लिमिट का 30 ही यूटिलाइज करें। 70 से ज्यादा लिमिट यूटिलाइजेशन पर क्रेडिट स्कोर गिर सकता है।

क्रेडिट स्कोर मेंटेन करने के लिए 4 जरूरी बातें बता रहे हैं

कार्ड लिमिट का 30% ही यूटिलाइज करें: हमेशा खर्च को लिमिट के 30% तक ही रखें। जैसे, 1 लाख रुपए लिमिट पर 30,000 रुपए तक ही खर्च करें।

कार्ड लिमिट बढ़ाने के लिए अप्लाई करें: अगर आपकी इनकम स्टेबल है और पेमेंट हिस्ट्री अच्छी है, तो बैंक से लिमिट बढ़ाने के लिए रिक्वेस्ट करें।

खर्च को अलग-अलग क्रेडिट कार्ड में बांटें: आपके पास एक से ज्यादा क्रेडिट कार्ड हैं तो रेगुलर बिलों को 2-3 कार्ड्स में बांट दें। इससे एक ही कार्ड का यूटिलाइजेशन रेश्यो नहीं बढ़ेगा।

क्रेडिट कार्ड स्पेंडिंग का अलर्ट लगाएं: कार्ड के मोबाइल ऐप या SMS अलर्ट को सेट करें, ताकि खर्च 30% से ऊपर जाए तो आपको अलर्ट मिल सके।

कम क्रेडिट लिमिट के नुकसान: बार-बार लिमिट पूरी करने से बैंक आपको फाइनेंशियली कमजोर समझते हैं।, लोन या नए कार्ड की एप्लिकेशन रिजेक्ट हो सकती है।, सिबिल स्कोर गिरने से भविष्य में लोन पाना मुश्किल होता है।

नेगेटिव रिकॉर्ड का प्रभाव 7 साल रह सकता है: भले ही आप मौजूदा समय में सभी भुगतान समय पर कर रहे हैं। लेकिन अगर पुराना रिकॉर्ड अच्छा नहीं है तो यह इसका असर 7 साल तक आपके क्रेडिट स्कोर पर दिख सकता है।

डिस्क्लेमर

निवेश पत्रिका में प्रकाशित लेखों के माध्यम से बाजारों एवं कॉरपोरेट जगत के घटनाक्रमों की निष्पक्ष तस्वीर पेश करने का प्रयास किया गया है। निवेश पत्रिका के नियंत्रण एवं जानकारी से परे परिस्थितियों के कारण वास्तविक घटनाक्रम भिन्न हो सकते है। निवेश पत्रिका में प्रकाशित रिपोर्टों के आधार पर पाठकों द्वारा किए जाने वाले निवेश और लिए जाने वाले करोबारी निर्णयों के लिए निवेश पत्रिका कोई जिम्मेदारी नहीं लेता है। पाठकों से स्वयं निर्णय लेने की अपेक्षा की जाती है।

- संपादकः रमेशचन्द मालू

Invest in Tax Saving (ELSS) Schemes, and 54 EC Bonds

Invest for 80C ELSS (Start SIP From Today), Capital Gain 54EC Bonds.

Invest With Better Mutul Fund Distributor Having Experience of 32 Years

Mob.: 98290-06801/98290-99899/98290-40424

बच्चों की शादी व पढ़ाई हेतु शीघ्र निर्णय लें

एक वर्ष का बच्चा होते ही अगर 100 रु. प्रति दिन निवेश करें तो 15 वर्ष बाद (बच्चें की उम्र 16 वर्ष होने पर) पायें रु. 15 लाख लगभग।

और यदि यही निर्णय पांच वर्ष बाद लेते हैं 100 रु. प्रति दिन 10 वर्ष बाद (बच्चें की उम्र 16 वर्ष होने पर) पायें रु. 7 लाख लगभग।

गणना मात्र 12% ब्याज प्रतिवर्ष चक्रवृद्धि दर सें की गई है....

'म्यूचुअल फंड में निवेश करने का हर वक्त सही वक्त होता है'

म्यूचुअल फंड आज के समय में भारत में एक पसंदीदा निवेश साधन के रूप में उभरे है।

इस समय म्यूचुअल फंड में निवेशित रहने का फैसला सही या गलत?

म्यूचुअल फंड्स में निवेशित रहना एक अच्छा फैसला हो सकता है, लेकिन यह आपके वित्तीय लक्ष्यों, जोखिम उठाने की क्षमता और बाजार की स्थिति पर निर्भर करता है। अगर आपका निवेश लॉन्ग टर्म यानी लंबी अवधि के लिए है, तो बाजार की छोटी-मोटी गिरावट से घबराने की जरूरत नहीं है।

म्यूचुअल फंड में निवेश करने का सबसे अच्छा समय क्या है?

वित्त विशेषज्ञों के मुताबिक म्यूचुअल फंड में निवेश करने का हर वक्त सही वक्त होता है। आप अभी निवेश करने के लिए म्यूचुअल फंड का उपयोग कर सकते हैं और आज ही अपना फंड बनाना शुरू कर सकते हैं। अपनी तरलता और लचीलेपन के कारण, म्यूचुअल फंड आपके पैसे को बढ़ाने का एक शानदार तरीका है। और जितनी जल्दी आप अपनी निवेश यात्रा शुरू करेंगे, उतनी ही बेहतर रिटर्न और वेल्थ क्रिएशन का आनंद लेने की संभावना होगी। फिर भी, म्यूचुअल फंड में निवेश शुरू करने का आपका फैसला आपकी जोखिम सहनशीलता और वित्तीय लक्ष्यों पर आधारित होना चाहिए। लेकिन यहां कुछ कारक दिए गए हैं जो आपको अपना निवेश शुरू करने के लिए सही समय का अंदाजा लगाने में मदद करेंगे।

ऊंचे मार्केट पर शुरू की गई एसआईपी से ज्यादा वेल्थ क्रिएशन होता है : स्टडी हाल ही में की गई कुछ स्टडीज के मुताबिक मार्केट के उच्चतम स्तर के दौरान शुरू किए गए सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट से लंबे समय में ज्यादा रकम जमा होती है। यानी मार्केट के गिरने का इंतजार करने के बजाय बाजार में लंबे समय तक बने रहना ज्यादा महत्वपूर्ण है। अगर आप वाकई में लॉन्ग टर्म एसआईपी से वेल्थ क्रि5एट करना चाहते हैं, आपको शुरुआत करते समय बाजार के उतार-चढ़ाव की चिंता करने की जरूरत नहीं है। इसके बजाय, आपको अपने वित्तीय लक्ष्यों के करीब पहुंचने पर अपनी निकासी की रणनीति पर ध्यान देना चाहिए।

एसआईपी कभी भी शुरू करें, लॉन्ग टर्म में फायदा ही मिलेगा

म्यूचुअल फंड में एसआईपी कभी भी शुरू कर सकते हैं। इसके लिए मार्केट के अनुकूल होने का इंतजार करना बेकार रहता है। जितना ज्यादा टाइम एसआईपी के जरिए निवेशित रहेंगे, उतना ही फायदे में रहेंगे। खासकर लंबी अवधि में। एसआईपी के माध्यम से नियमित निवेश करने से बाजार की अस्थिरता का जोखिम कम होता है और लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न की संभावना रहती है।

निवेश करने का सही समय ऐसे निर्धारित करें

- *निवेश पर रिटर्न :* अगर आप लंबी अवधि में ज्यादा रिटर्न हासिल करना चाहते हैं, तो इक्विटी फंड आपके लिए सबसे अच्छा विकल्प हैं। आपको यह ध्यान रखना चाहिए कि अच्छे रिटर्न का आनंद लेने के लिए आपको कम से कम 5 साल तक निवेशित रहना होगा। अपनी जरूरत के अनुसार आप अपने निवेश का समय तय कर सकते हैं।
- *इन्वेस्टमेंट होराइजन :* घर के डाउन पेमेंट, वाहन खरीदने, छुट्टी मनाने आदि जैसे अल्पकालिक लक्ष्यों के लिए, आप शॉर्ट टर्म इन्वेस्टमेंट होराइजन चुन सकते हैं। इसके लिए डेट फंड में निवेश सही रहता है। वैकल्पिक रूप से, शादी, शिक्षा, रिटायरमेंट आदि जैसे लॉन्ग टर्म लक्ष्यों के लिए, आप इक्विटी फंड का विकल्प चुन सकते हैं।
- *मार्केट की स्थिति :* म्यूचुअल फंड्स बाजार से जुड़े उत्पाद हैं। आप बाजार के रुझान को देखकर अपने निवेश के समय की गणना कर सकते हैं। यदि आप ज्यादा जोखिम लेने की क्षमता रखते हैं, तो किसी भी समय बाजार में प्रवेश करें। यदि आप जोखिम से बचना चाहते हैं, तो बाजार में करेक्शन (गिरावट) होने पर ही प्रवेश करें।
- *जोखिम उठाने की क्षमता :* अपने जोखिम प्रोफाइल का विश्लेषण करने से आपको निवेश की राशि, अवधि, फंड का प्रकार और निवेश करने के लिए सबसे अच्छा समय निर्धारित करने में मदद मिलती है। जोखिम के प्रति अपनी सहनशीलता के आधार पर, आप डेट, इक्विटी और हाइब्रिड फंड में से चुन सकते हैं। यदि आप जोखिम उठाने के लिए तैयार हैं तो पूंजी में तेज बढ़ोतरी के लिए इक्विटी फंड चुनें।
- *जल्दी निवेश शुरू करें:* आप जितनी जल्दी म्यूचुअल फंड में निवेश करना शुरू करेंगे, आपको उतना ही ज्यादा रिटर्न मिलेगा।

अगर आप आज से ही 10000 रूपये महीने की SIP चालू करते है तो बन सकते है 1.5 करोड़ रूपये

SIP RETURNS

Rs 5000 invested monthly

YEARS	AMOUNT INVESTED	Returns 10%	Returns 12%	Returns 15%
5	300000	387185	408348	442873
10	600000	1024225	1150193	1376085
20	1200000	3796844	4946277	7486197

Rs 10000 invested monthly

YEARS	AMOUNT INVESTED	Returns 10%	Returns 12%	Returns 15%
5	600000	774371	816697	885745
10	1200000	2048450	2300387	2752171
20	2400000	7593688	9892554	14972395

Rs 20000 invested monthly

YEARS	AMOUNT INVESTED	Returns 10%	Returns 12%	Returns 15%
5	1200000	1548741	1633393	1771490
10	2400000	4096900	4600774	5504341
20	4800000	15187377	19785107	29944790

Rs 50000 invested monthly

YEARS	AMOUNT INVESTED	Returns 10%	Returns 12%	Returns 15%
5	3000000	3871854	4083483	4428725
10	6000000	10242249	11501934	13760853
20	12000000	37968442	49462768	74861974

Call us to invest : 82870 99099

#Mutual fund investment are subject to market risk, read all scheme related document carefully

स्वतत्वाधिकारी, प्रकाशक व मुद्रक रमेश चन्द मालू द्वारा मोहन शर्मा एण्ड कंपनी प्रा.लि.ए-10, सुदर्शनपुरा औद्योगिक क्षेत्र जयपुर से मुद्रित एवं 103 प्रथम मंजिल, बृज अनुकम्पा, बीएसएनएल के सामने, अशोक मार्ग, सी-स्कीम जयपुर-302001 से प्रकाशित। सम्पादक : रमेश चन्द मालू मो. 98290-40524, 98290-66601
ई-मेल : niveshpatrika@mftoday.com वेबसाईट www.mftoday.com